

सफलता की कहानी -मधुमक्खी पालन आधारित समन्वित खेती से कृषक की आय में उल्लेखनीय वृद्धि

नूपुर शर्मा¹, बी. एल. मीणा² एवं सुनील मीणा³

शस्य वैज्ञानिक¹, वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष², तिलहन तकनीकी सहायक³

कृषि विज्ञान केंद्र सवाई माधोपुर, कृषि विश्वविद्यालय कोटा^{1,2,3}

राजस्थान सवाई माधोपुर जिले के बामनवास क्षेत्र के तिगरिया गाँव के कृषक ऋषिकेश मीणा (पुत्र श्रीलाल मीणा) ने कृषि के विभिन्न घटकों को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। वर्ष 2020 से पूर्व कृषक केवल पारंपरिक खेती करते थे, जिसमें मुख्य रूप से बाजरा, सरसों, गेहूँ तथा चना जैसी फसलों की खेती होती थी। इससे प्राप्त आय सीमित थी।

वर्ष 2022 में कृषक ने मधुमक्खी पालन को अपनी खेती के साथ जोड़ा और 35 बक्सों से इसकी शुरुआत की। नियमित देखभाल तथा उचित प्रबंधन के कारण यह गतिविधि तेजी से सफल हुई। वर्तमान में वर्ष 2026 में कृषक के पास लगभग 180 मधुमक्खी बक्से हैं, जिनसे उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 5,40,000 रुपये की आय प्राप्त हो रही है।

कृषक के पास लगभग 2.0 हेक्टेयर कृषि भूमि है, जिसमें वे बाजरा-सरसों आधारित फसल प्रणाली अपनाते हैं। इसके साथ ही उन्होंने पशुपालन को भी अपनी खेती का महत्वपूर्ण भाग बनाया है। वर्तमान में उनके पास 4 मुरा नस्ल की भैंस, 1 देशी गाय तथा 8 बकरियाँ हैं।

फसल उत्पादन, मधुमक्खी पालन तथा पशुपालन जैसे सभी कृषि घटकों को जोड़कर कृषक ने एक सफल समन्वित खेती प्रणाली स्थापित की है। इन सभी गतिविधियों से उन्हें वर्तमान में लगभग 7,65,000 रुपये प्रति वर्ष की कुल आय प्राप्त हो रही है।

यह उदाहरण दर्शाता है कि यदि किसान पारंपरिक खेती के साथ मधुमक्खी पालन तथा पशुपालन को अपनाएँ, तो वे अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं। यह सफलता की कहानी क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत हैं

तकनीक का अपनाना

वर्ष 2022 में कृषक ऋषिकेश मीणा ने अपनी पारंपरिक खेती के साथ मधुमक्खी पालन को आय के अतिरिक्त स्रोत के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। उन्होंने प्रारम्भ में सीमित संसाधनों के साथ 35 मधुमक्खी बक्सों से इस गतिविधि की शुरुआत की। उचित देखभाल, नियमित प्रबंधन तथा आसपास उपलब्ध पुष्पीय स्रोतों का लाभ लेते हुए कृषक ने मधुमक्खी पालन को धीरे-धीरे विकसित किया। समय के साथ इस गतिविधि का विस्तार करते हुए वर्तमान में कृषक के

पास लगभग 180 मधुमक्खी बक्से हो गए हैं, जिससे उन्हें शहद उत्पादन के माध्यम से अच्छी आय प्राप्त हो रही है।

परिणाम उपलब्धियाँ

मधुमक्खी पालन को अपनाने के बाद कृषक की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। प्रारम्भ में 35 बक्सों से शुरू की गई यह गतिविधि निरंतर विस्तार पाती गई और वर्तमान में वर्ष 2026 तक कृषक के पास लगभग 180 मधुमक्खी बक्से हो चुके हैं। इन बक्सों से प्राप्त शहद उत्पादन के माध्यम से कृषक को

प्रतिवर्ष लगभग 6,75,000 रुपये की आय प्राप्त हो रही है।

इसके अतिरिक्त मधुमक्खियों द्वारा फसलों में परागण की प्रक्रिया बेहतर होने से बाजरा, सरसों तथा अन्य फसलों की उत्पादकता में भी सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। इस प्रकार मधुमक्खी पालन को खेती के साथ जोड़ने से न केवल शहद उत्पादन से अतिरिक्त आय प्राप्त हुई, बल्कि फसल उत्पादन में भी सुधार हुआ है।

सारणी 1- कृषक की आय में परिवर्तन (पहले और बाद की स्थिति)

क्रम संख्या	गतिविधि	वर्ष 2020 से पहले स्थिति	वर्ष 2026 में स्थिति	वार्षिक आय (रुपये)
1	फसल उत्पादन	पारंपरिक खेती (बाजरा, सरसों, गेहूँ, चना)	2.0 हेक्टेयर में बाजरा-सरसों आधारित फसल प्रणाली	1,50,000
2	मधुमक्खी पालन	नहीं था	180 बक्सों के साथ मधुमक्खी पालन (लगभग 3600 किग्रा शहद / 150 रुपये / किग्रा)	5,40,000
3	भैंस पालन	सीमित	4 मुर्दा नस्ल की भैंस	50,000
4	गाय पालन	नहीं के बराबर	1 देशी गाय	10,000
5	बकरी पालन	बहुत कम	8 बकरियाँ	15,000
कुल वार्षिक आय	कृ	लगभग 1,50,000 रुपये		लगभग 7,65,000 रुपये

सारणी 1 में कृषक द्वारा अपनाई गई समन्वित खेती प्रणाली के विभिन्न घटकों तथा उनसे प्राप्त होने वाली अनुमानित

वार्षिक आय का विवरण दिया गया है। इसमें दर्शाया गया है कि कृषक के पास मधुमक्खी पालन, फसल उत्पादन तथा पशुपालन जैसी

विभिन्न गतिविधियाँ हैं, जिन्हें एक साथ अपनाकर उन्होंने अपनी आय के स्रोतों को बढ़ाया है। सारणी के अनुसार कृषक के पास 180 मधुमक्खी बक्से हैं, जिनसे लगभग 3600 किलोग्राम शहद का उत्पादन होता है। यदि शहद का औसत मूल्य 150 रुपये प्रति किलोग्राम माना जाए, तो मधुमक्खी पालन से लगभग 5,40,000 रुपये प्रति वर्ष की आय प्राप्त होती है, जो कुल आय का प्रमुख भाग है।

इसके अतिरिक्त कृषक के पास लगभग 2.0 हेक्टेयर कृषि भूमि है, जिसमें बाजरादूसरसों आधारित फसल प्रणाली अपनाई जाती है, जिससे लगभग 1,50,000 रुपये की वार्षिक आय होती है। पशुपालन के अंतर्गत 4 मुर्दा नस्ल की भैंसों से लगभग 50,000 रुपये, 1 देशी गाय से लगभग 10,000 रुपये तथा 8 बकरियों से लगभग 15,000 रुपये की आय प्राप्त होती है।

इस प्रकार फसल उत्पादन, मधुमक्खी पालन तथा पशुपालन जैसे सभी घटकों को जोड़ने पर कृषक को लगभग 7,65,000 रुपये प्रति वर्ष की कुल आय प्राप्त हो रही है। यह दर्शाता है कि विभिन्न कृषि गतिविधियों को एकीकृत रूप से अपनाने से कृषक की आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

प्रभाव

समन्वित खेती प्रणाली अपनाने से कृषक की आर्थिक स्थिति में स्पष्ट सुधार हुआ है और उनकी वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषक की इस सफलता को देखकर आसपास के अन्य किसान भी मधुमक्खी पालन जैसी गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

निष्कर्ष मधुमक्खी पालन को फसल उत्पादन और पशुपालन के साथ जोड़ने से किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है। इसलिए किसानों को समन्वित खेती प्रणाली अपनाकर उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करना चाहिए।



केंद्र द्वारा 7 दिवसीय मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण



कृषक के खेत पर मधुमक्खी पालन इकाई की स्थापना